Dr. Sunil Kr. Suman
Assistant Professor (Guest)
Dept. of Psychology
D.B. college Jaynagar
L.N.M.U. Darbhanga

Study material
B.A. Part-I (Gen./Subs)
Date:- 09-12-2020
Lecture No.- 16

Remembering and forgetting:- Long term memory/ दिर्घकालीन स्मृति

(Long-term memory):- LTM का अर्थ ऐसे स्मृति संचयन से होता है जिसमें सूचनाओं को व्यक्ति काफी लंबे समय तक रख पाता है। इस स्मृति की न्यूनतम सीमा 20-30 सेकेण्ड से लेकर जीवन भर तक की हो सकती है। LTM की क्षमता को असिमीत भी कहा गया है। LTM की संचयन क्षमता काफी अधिक होती है। LTM को कई नामों से जाना जाता है। जैसे- विलियम जेम्स, इसे गौण स्मृति (secondary memory) कहते हैं, क्योंकि सूचनाएं STM से होकर LTM तक पहुँचती है। LTM को असक्रिय स्मृति (inactive memory) भी कहा जाता है क्योंकि इसमें ज्यादातर सूचनाएं व्यक्ति वर्तमान मे प्रयोग नहीं करता।

LTM की विशेषताएं (characteristics):- LTM की निम्न विशेषताएं अत्यन्त महत्वपूर्ण है:-

(I) LTM मे संचित सूचनाएं सापेक्ष रूपसे (Relatively) स्थायी होती है।

(ii) LTM मे संचित सूचनाएं मौलिक उद्दीपक से प्राप्त सूचनाओं से थोड़ा भिन्न होती है, क्योंकि सूचनाओं का कुछ संकेतीकरण किया जाता है। इस तथ्य से संबंधित अध्ययन वर्टलेट ने किया।

P.T.O

Scanned with CamScanner

(iii) जायगारनिक प्रभाव (Zeigarnik effect):- जायगा-(6)

रनिक 1927 में अपने प्रयोगों द्वारा प्रमाणित किया की LTM से संचित ऐसी सूचनाएं काम सक्रिय होती है जो कि किसी घटना या कार्य पूरा होने के बाद प्राप्त होती है बल्कि ऐसी सूचनाएं अधिक सक्रिय होती है जो कि किसी कार्य के अधूरा रह जाने के बाद सक्रिय होती है। इसी कारण व्यक्ति को ऐसे कार्यों की पुनरस्मृति अधिक होती है जो कि अधूरे रह गये हो। इसे ही मनोविज्ञान में जायगारनिक प्रभाव (Zeigarnik effect) कहते है।

(IV) LTM में संचित सामग्रियों की परिशुद्धता अधिक पायी जाती है। इस तथ्य की पुष्टि शेपर्ड के अध्ययनों से होती है।

(V) LTM में सूचनाएं संगठित एवं साहचर्यात्मक ढंग से संचित की जाती है।

Next class

टुलविंग (Tulving-1972) ने LTM को दो भागों में विभक्त किया है।